ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 7 अंक : 1 अक्टूबर - नवम्बर 2016 मूल्य 15/-

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्री पुष्पित पारासर
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/- दो वर्ष

क्या कहाँ

शीघ्र धन की समृद्धि बढाने वाला पिरामिड श्री यंत्र	डा. महेश पारासर	4
दीपावली पूजन विधि	डा. महेश पारासर	8
तांत्रोक्त नारियल	डा. रचना के भारद्वाज	9
धन बाधा कैसे दूर करें?	डा. शोनू मेहरोत्रा	10
आध्यात्म ज्योतिष और प्रकाश पर्व दीपावली	पुष्पित पारासर	11
योग साधना	प्रभुदयाल गुप्ता	12
दिशा एंव राशियों के अनूकूल करें दीपावली की साज सज्जा	पवन कुमार मेहरोत्रा	13
इस दीपावली 2016 पर करने योग्य कुछ श्रेष्ठ उपयोगी उपाय	दयानन्द शास्त्री	14
सेवा करने की हो ललक	सुरेश अग्रवाल	15
सुख समृद्वि एंव व्यापार में उन्नति के लिये दीपावली में किए जाने वाले कुछ विशेष उपाय	अजय दत्ता	16
सूर्य भेदी प्राणायाम	विष्णु पाराशर	17
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	18–19
पूजा – सामग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

"प्रधान संपादक की कलम से"

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य, ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार, ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित, प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

शीघ्र धन की समृद्धि बढाने वाला पिरामिड श्री यंत्र

प्रिय सदस्यों! आप सभी को **भविष्य दर्शन** की तरफ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं। भगवान से यही कामना करता हूँ कि आप सभी की दीपावली शुभ एंव सुखमय रहें। प्रत्येक वर्ष में अपने अनुभव द्वारा कुछ न कुछ पत्रिका में विशेष रूप से दीपावली के लिये कुछ सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास करता रहा हूँ जिससे पाठको को एवं आम जनता को लाभ प्राप्त हो सकें।

किसी भी वस्तु का अस्तित्व में आने से लेकर उसके पुनः स्वभाव में चले जाने तक तीन अवस्थायें रहती है। उद्गम, विकासमय और चरम विलय अथवा पूर्ण हो जाना उसी प्रकार श्रीयंत्र रचना में बिन्दू उद्गम स्थान है जहाँ से यंत्र रचना प्रारम्भ होती है। यही ब्रहम है। उसके बाद त्रिकोण से लेकर षोडशदल तक यह विकासमय रहता है। जो सृष्टि पालन अथवा विकास कर्ता भगवान विष्णु है। उसके बाद पूर्णावस्था भूपुर है। जो स्वयं शिव का प्रतीक है। यही रचना सत्य, रज और तमो गुण का प्रतीक है।

श्रीं यंत्र स्वयं ब्रहमाण्डमय है। सत्य लोक बिन्दू से लेकर भूपुर अन्तिम रेखा में पाताल समाहित है। श्री यंत्र महाबिन्दू तथा 43 त्रिकोणों और अष्टदल षोडशदल कमल व भूपुर रेखाओं के विशेष योग व रचना से बना है। जो कि लक्ष्मीजी का मूर्त रूप है सिर बिन्दू से लेकर भूपुर अंतिम रेखा चरण कमल है 43 त्रिकोणों का योग **शिव शक्ति** के संयोग से बना है। उर्ध्वमुखी त्रिकोण शिव का प्रतीक है, तथा अधोमुखी शक्ति का।

यंत्र रचना पूर्ण होने पर इसको मंत्रों व प्राण प्रतिष्ठा विधि द्वारा मांसल रूप दिया जाता है। जिससे यह जाग्रत हो शक्तियों का विकास करके जहाँ भी स्थापित किया जाता है, वहां अपना प्रभाव दिखाता है। श्री यंत्र हमारे शरीर मन तथा भौतिक ग्रह आदि की नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर देता है, तथा सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह कर देता है। Biochemic और Biophysic पद्धति से यह वैज्ञानिक विद्या है। यंत्र और मंत्र का संयोग इसे यह रूप देता है। अतः पिरामिड़ **"श्री यंत्र"** घर में स्थापित कर उसका लाभ उठायें उस दिन श्री सूक्त का या कनकधारा का पाठ करें अथवा योग्य ब्राहमण द्वारा करवायें।

यंत्र मंत्रमय प्रोक्तं मन्त्रात्मा देवतैत हि। देहात्मनौर्मया भेदो मंत्र देवतयोस्तथा।।

यंत्र–मंत्र रूप है मंत्र देवताओं का विग्रह है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता है। उसी प्रकार यंत्र और देवता में भी कोई भेद नहीं होता है, उसी प्रकार यंत्र और देवता में भी कोई भेद नहीं है।

देवी भागवत के अनुसार प्रतिमा अभाव में यंत्र को इष्टदेव मानकर उसका पूजन कर सकते हैं।

यंत्र को आवास गृह कहा जाता है। हर देवी देवता का अपना–अपना आवास है उसी प्रकार अलग–अलग प्रकार के यंत्र है। यंत्र की विशेष यांत्रिक रचना देवी–देवताओं को अपने और आकर्षित करती है, जिससे वह उसमें आकर वास करते हैं और वांछित फल प्रदान करते हैं।

यंत्रों का यंत्रराज **श्री यंत्र** को कहा जाता है क्योंकि **"श्री इति ऐश्वर्यम्"** श्री का अर्थ है ऐश्वर्य, धन एवं वैभव। गृहस्थ जीवन में इन चीजों की अति आवश्यकता होती है और वो सब **"पिरामिड़ श्री यंत्र"** स्थापना से प्राप्त होता है। इसकी स्थापना से स्वयं **"श्री"** (लक्ष्मीजी) घर में वास करती हैं और दरिद्रता, आभाव आदि दूर हो जाते हैं।

हमारे जीवन में सुखों की प्राप्ति हेतु यंत्रों की विशेष कृपा है फिर चाहे वों दूरसंचार यंत्र ही क्यों न हो। जिस प्रकार भौतिक सुखों को प्राप्त करने हेतु दूर संचार यंत्र (मोवाइल) को चार्ज किया जाता है, फिर उसे आप प्रयोग कर सकते है। ठीक उसी प्रकार इस आध्यातमिक यंत्रो को सिद्ध करके चार्ज किया जाता है। उसके बाद इनकी शक्ति प्रभाव दिखाती है। बिना सिद्ध किया हुआ यंत्र बन्द पड़े मोबाइल जैसा है। वो है तो लेकिन उसका लाभ नहीं है। अतः जो यंत्र सिद्ध किया हुआ और प्राण प्रतिष्ठित हो उसी को प्रयोग में लायें।

यंत्रो में भी प्रकार होते है। जिनमें मुख्य रूप से

1. मेरुदण्ड   2. कूर्म पृष्ठ   3. भूपृष्ठ प्रचिलित हैं।

इनमें भी **''मेरुदण्ड''** वा **''मेरूपृष्ठ''** की रचना अद्भुत व अत्यधिक प्रभावशाली होती है क्योंकि यह यंत्र दुर्ग स्वरूप वा पिरामिड स्वरूप में होता है। पिरामिड पर कई वैज्ञानिक आज भी रिसर्च कर रहे हैं कि यह कैसे काम करता है और इसके क्या–क्या लाभ है। जैसाकि कई हजार वर्षो तक मुर्दे सुरक्षित पाये गये पिरामिड के नीचे। हमारे मन्दिरों को पिरामिड रूप दिया जाता है। जिससे मन्दिरों में मानसिक शांति प्राप्त होती है। पिरामिड एक विशेष कोण पर बना होने पर ही लाभ देता है। ठीक उसी प्रकार विशेष यंत्र भी विशेष कोण वृत्त आदि के मिश्रण से सही रचना होने पर ही लाभ देता है।

''श्री यंत्र'' नव चक्रों से बना होता है। जो क्रमशः हैः–

1. बिन्दु   2. त्रिकोण   3. अष्टार   4. अन्तर्दशार
5. बहिर्दशार   6. चतुर्दशार   7. अष्टदल   8. षोडशदल
9. भूपुर

इन्ही नव चक्रों से नव सिद्धियां अथवा लाभ प्राप्त होते है जो इस प्रकार है।

1. सर्वानन्दमय   2. सर्वसिद्धिप्रद   3. सर्वरोगहर   4. सर्वरक्षाकर
5. सर्वार्थसाधक   6. सर्वसौभाग्यदायक   7. सर्व संक्षोभण कारक   8. सर्वाशापरिपूरक
9. त्रैलोक्य मोहन

इसे घर में स्थापित करने से सभी सुख प्राप्त होते हैं।

महेश पाराशर

दीपावली पूजन का समय सन् 2016

30–10–2016 रविवार के दिन पूजन समय प्रातः 7:50 से दोपहर 12:01 तक, दोपहर 1:56 से सायं 4:51 बजे तक, सायं 6:27 से 10:36 बजे तक, रात्रि 01:01 से 03:17 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय प्रातः 7:50 से 10:07 बजे तक, दोपहर 1:56 से 2:48 बजे तक, सायं 6:27 से 8:24 बजे तक एवं रात्रि 1:37 से 3:14 बजे तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय सायं 04:11 से 05:35 तक।

श्री अरुण बंसल
President
AIFAS

उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नगरी में

। अर्न्तराष्ट्रीय ज्यौतिष महासम्मेलन।

कानपुर (उ.प्र.)

पं. शरद त्रिपाठी
Governor
AIFAS
(UP)

कार्यक्रम (31.12.2016 से 01.01.2017)

31.12.2016 सायं 7:00 से 11:00 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम (गुलाब राज हॉल)

1.1.2017 प्रातः 10:00 से सायं 06:00 बजे तक गोष्ठी एवं सम्मेलन (लाजपत भवन)

अतिथि

USA, BANGLADESH, AUSTRALIA, NEPAL के वरिष्ठ ज्योतिष, कैबिनेट मंत्री, उद्योगपति, बॉलीवुड हस्ती

स्मारिका हेतु लेख आमंत्रित

विषय : ''वर्ष 2017 ज्योतिष के आईने में''

अंतिम तिथि : 15.11.2016

समस्त विद्याओं के जानकार आमंत्रित

ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, सामुद्रिक, रेकी, टैरो कार्ड, अरोमा, क्रिस्टल, कलर थेरेपी, इत्यादि।

निःशुल्क खान–पान एवं प्रवास व्यवस्था

सभी प्रतिभागियों हेतु सम्मान पत्र एवं स्मृति चिन्ह।

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें : श्रीमती विद्या देवानी : फोन . 011–40541040 **Email :** mail@aifas.com

पं. शरद त्रिपाठी : मो. 9336101269, 9918101269 **Email :** mani_futurepoint@hotmail.com

दीपावली हेतु अभिमत्रिंत पूजन सामिग्री एवं पूजा किट

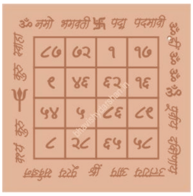
लक्ष्मी वाहन यंत्र

कौड़ी

धनियाँ

गोमती चक्र

गुंजा

लघु व एकांक्षी नारियल

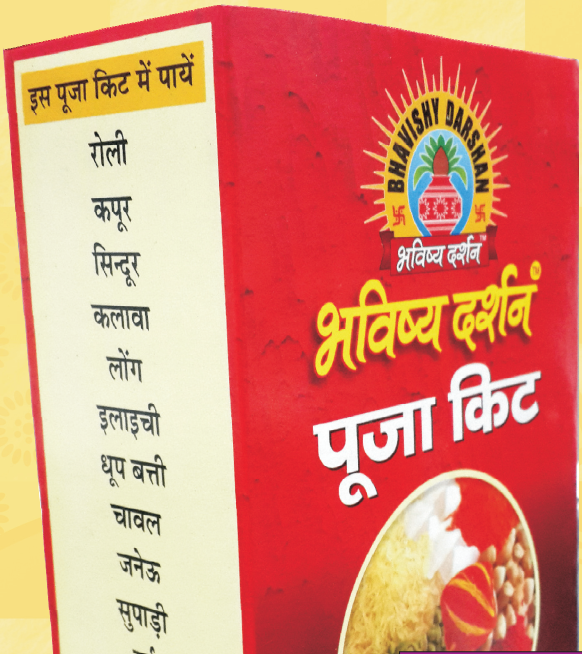

काली हल्दी

कमल गट्टा

चावल

रुद्राक्ष

दीपावली पर अभिमन्त्रित पूजन सामिग्री एवं पूजन किट

प्रिय सदस्यों! आप सभी को **भविष्य दर्शन** की तरफ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं। भगवान से यही कामना करता हूँ कि आप सभी की दीपावली शुभ एंव सुखमय रहें। हम पिछले दो वर्ष से पूजन किट के बारे में प्रकाशित कर रहे है जिसमें सभी वस्तुओं को एंव यंत्र को सिद्ध करके हमने दिया था। पूजन किट से व्यक्तियों को आर्थिक परेशानी में बहुत लाभ मिला (जैसे रूका हुआ धन आया, नौकरी में पदोन्नति, व्यापार में लाभ एंव आर्थिक तंगी का दूर होना)। इसीलिये मैं पुनः यह पूजन सामिग्री पत्रिका में प्रकाशित कँरु जिससे और भी लोग इस पूजन सामिग्री से लाभ पा सके। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि इस वर्ष की दीपावली भी आप सभी के लिये शुभ एंव लाभदायी हो। माता सवरस्वती जी, श्री गणेश जी एंव माता श्री महालक्ष्मी जी का आपके घर में वास हो।

प्रतिवर्ष कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को दीपावली पर्व मनाया जाता है। दीपावली पर्व पर घर घर में दीप जलाये जाते हैं। मिष्ठानादि से भोग लगाकर लक्ष्मी गणेश जी की पूजा करी जाती है। सभी वर्गों के लोग तथा अमीर गरीब हर स्थिति का व्यक्ति दीपावली पर लक्ष्मी आगमन की कामना करता है। विशेष रूप से व्यापारी वर्ग के लिए यह महत्वपूर्ण पर्व होता है तथा कर्ण वर्ग इस पर्व का इन्तजार नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए करते हैं।

लक्ष्मी को चंचला कहा गया है लक्ष्मी जी एक जगह पर अधिक समय तक स्थिर नहीं रहती हैं इसलिए दीपावली पर जन जन नाना प्रकार से पूजा अर्चना करके लक्ष्मी जी को स्थिर रखने की कामना करते हैं। लक्ष्मी जी को स्थिर रखने हेतु व प्राप्ति के लिए कुछ विशेष धन प्राप्ति सामिग्री को, सिद्ध व अभिमन्त्रित पूजा किट तैयार की गयी है जिसे प्रयोग में लाकर आप लाभ प्राप्त कर सकते है।

पूजन हेतु पूजा किट में- रोली, चावल, बतासे, कलावा, सुपारी, लौंग, इलायची, धूपबत्ती, कपूर, इत्र शीशी, जनेऊ, सिन्दूर आदि **धन लाभ हेतु तिजोरी में रखने हेतु अभिमन्त्रित सामिग्री**- यंत्र, कमलगट्टा, कौड़ी, गौमती चक्र, काली हल्दी, गुँजा, लघु नारियल, अक्षत, धनियाँ, सुपारी, रूद्राक्ष आदि।

श्री विष्णु (धन एवं मान सम्मान वृद्धि) यंत्र- दीपावली के पूजन में श्री विष्णु यंत्र की पूजा विधि विधान से करने से माँ लक्ष्मी एवं श्री विष्णु जी की कृपा चिरकाल तक बनी रहती है। माँ लक्ष्मी की स्थिरता के लिए ही इस यंत्र की पूजा दीपावली पर की जाती है। इसकी पूजा बहुत ही आसान है। इस यंत्र को स्थापित करने इस यंत्र की फल, फूल, गंध, अक्षत, रोली, कुमकुम से पूजन करके इस यंत्र से लक्ष्मी के पीछे लघु बीज मंत्र **'ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्मीभयो नमः'** मंत्र का 5 माला जाप कमलगट्टे की माला या स्फटिक की माला से एवं **'श्री गोविन्दाय नमः'** मंत्र का 1 माला जाप तुलसी की माला से करना चाहिए। इससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर सभी तरफ से खुशहाली प्रदान करती है।

गोमती चक्र- गोमती चक्र भगवान विष्णु जी का प्रतीक माना जाता है। अतः जहाँ विष्णु जी का आशीर्वाद है वहाँ लक्ष्मी जी का वास रहता हैं। यह चक्र लक्ष्मी जी को विशेष प्रिय है।

गुँजा- गुँजा को सिद्ध करके शुभ मुहुर्त में धन स्थान पर रखने से आर्थिक लाभ की प्राप्ति होती है एवं ऋण मुक्ति में भी लाभप्रद होता है।

कमलगट्टा- लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने हेतु कमल के बीज कमलगट्टों से उनका पूजन व हवन किया जाता है जिससे लक्ष्मी जी की कृपा बरसने लगती है।

कौड़ी- कौड़ी को प्राचीन कालखण्ड में लक्ष्मी स्वरूप में ही प्रयोग किया जाता था। कौड़ी सिद्ध करके घर अथवा दुकान में रखने से लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती हैं।

काली हल्दी- काली हल्दी अभिमन्त्रित करके घर में स्थापित करने से बुरी नजरों से बचाव होता है। शुत्रओं पर विजय प्राप्त होती है तथा कार्य सिद्ध होते हैं।

लघु व एकांक्षी नारियल- यह दुर्लभ नारियल लक्ष्मी जी को अत्यंत प्रिय है घर में लाल कपड़े पर सिन्दूर लगाकर स्थापित करने से धन लाभ होता है।

रूद्राक्ष- सिद्ध रूद्राक्ष के दर्शन या स्पर्श (छूने) मात्र से पापों का नाश होता है तथा घर में या प्रतिष्ठान में स्थापित करने से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होती है।

अक्षत- अक्षत (चावल) से पूजन करने से व स्थापित करने से कुल वृद्धि होती है एवं रुके हुये कार्य भी सिद्ध होते हैं। अक्षत (चावल) से बनी खीर से लक्ष्मी जी का हवन करने से लक्ष्मी जी स्थिर बनी रहती है एवं उनकी असीम कृपा भी बनी रहती है।

धनियाँ- सिद्ध साबुत धनियाँ को पूजा स्थल में या तिजोरी में स्थापित करने से धन धान्य की वृद्धि होती है तथा तंत्र एवं टोने–टोटकों से बचाव भी होता है।

यह धन प्राप्ति पूजा सामग्री का प्रयोग कर आप लाभान्वित हो सकते हैं। दीपावली पूजन की विधि पत्रिका के पेज क्रमांक 8 पर विस्तार से दे रखी है। **प्रत्येक दीपावली पर यंत्र को छोडकर पूजन सामिग्री का हर सामान यमुना जी में विसर्जित करें**। पूजन सामग्री प्राप्ति हेतु (भविष्य दर्शन) संस्थान में सम्पर्क करें। ❋❋❋

1500/– की खरीद पर पायें

15% की छूट

3100/– की खरीद पर पायें

25% की छूट

दीपावली पूजन विधि

श्री गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ अथवा चित्र, रोली, चावल, फूलमाला, पान, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची, कलावा, धूपबत्ती, कपूर, रूई, घी, माचिस, मीठा तेल, खील-बतासे, पंच मेवा, खाँड़ के खिलौने, मिठाई, नुक्ती के लड्डू,फल, गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, बूरा, जनेऊ, घिसा हुआ चन्दन, रोली, बसने की पुड़िया, गोला, नारियल पानी वाला, वस्त्र चढाने वाले और रूपये थाली में सजा कर रखें।

भवन के मुख्य द्वार पर

।। श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

शुभ 卐 लाभ

सिन्दूर में घी मिलाकर अनामिका जिसमें अंगूठी पहनते है उस उंगली से लिखें। एक साबुत बताशा सतिये के बीच में चिपका दें।

दीपावली पूजन कैसे करें

दीपावली लक्ष्मी जी का पर्व माना गया है। प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिये लक्ष्मी (धन) आवश्यक है, इस पूजा विधि का आधार यही मंत्र है।

मंन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ।।

मंत्र का सरल भाव है कि मैं मंत्र, क्रिया, विधि और भक्ति आदि नहीं जानता हूँ जैसे भी आपकी पूजा की है आप उससे प्रसन्न होकर मेरा कल्याण करें।

पूजा विधि: सबसे पहले स्नान करके नया जनेऊ पहने, नये अथवा धुले हुए कपड़े पहने, टोपी लगावें। पूरब-पश्चिम अथवा उत्तर की ओर मुँह करके अपने आसन पर बैठ जायें। पत्नी को सीधे हाथ की ओर बैठावें। चुटिया में गांठ लगावें। चुटिया न होने पर चुटिया के स्थान को छू लें।

अपने सामने चौकी या पटरा अथवा जमीन पर अपने सीधे हाथ की ओर गणेश जी एवं उल्टे हाथ की ओर लक्ष्मी जी को चावल डाल कर विराजमान करें। उलटे हाथ की ओर घी का तथा सीधे हाथ की ओर मीठे तेल का (तिल का तेल) दीपक चावल डालकर रख दें।

अपने सामने पूजन की थाली, पंचपात्र आचमनी कटोरी, चम्मच आदि रख लें। दोनों दीपक एवं धूपबत्ती जलावें। चावल हाथ में लेकर हाथ जोड़ें और कहें- **'हे दीपक देवता** जब तक हम पूजन करें तब तक आप जलते रहना। चावल दीपकों के पास चढ़ा दें।

पान अथवा चम्मच से सबके ऊपर **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** कहकर पानी छिड़क दें। इसे पवित्रकरण कहते हैं। उल्टे हाथ से सीधे हाथ में जल लें और ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय कह कर तीन बार पी लें। (पानी पीकर सिर पर हाथ नहीं रखें) हाथ धो लें। यह आचमन है। जरा से चावल उल्टे हाथ में रखकर सीधे हाथ से ढक लें दस बार ''**ओउम्**'' कहें और अपने चारों ओर छोड़ दें इसे दिशा पूजन अथवा दिग्बन्धान कहते हैं।

नवग्रह की पूजा करें। चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। लड्डू, मिठाई, खील-बतासे चढ़ा दें।

गणेशजी विघ्नविनाशक, बुद्धि और विवेक के देवता हैं हर काम में सर्वप्रथम इनका पूजन किया जाता है। गणेश जी के पूजन का भाव है हम बुद्धि से धन अर्जित करें एवं विवेक से उसे खर्च करें। बुद्धिहीनता, अविवेकी ढंग, गलत तरीके से न तो धन कमायें, न इस प्रकार खर्च करें।

ॐ एकदन्ताय विदमहे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। अथवा **श्री गणेशायः नमः** कहकर गणेश जी पर चावल छोड़ दें।

प्रत्येक पूजा में गणेश जी के आवाह्न के बाद संकल्प करने की परम्परा है। यह संकल्प क्या है ? जब हमारे मन में कोई विचार उठता है तब बुद्धि एवं हृदय से स्थिर (पक्का) करते हैं। ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) ने शरीर के अंगों को प्रेरित किया और विचार कार्य रूप में बदल जाते हैं। इसे संकल्प कहते हैं। अच्छे कार्य उद्घोषणापूर्वक किये जाते हैं। कुकृत्य (बुरे काम) छिपकर करने का मन होता है कोई देख न ले। अच्छे संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, दैवीय शक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता है। संकल्प में सम्वत्, मास, पक्ष, तिथि, दिन, पर्व, गोत्र एवं नाम बोलकर अहम्करिष्ये कहा जाता है।

सीधे हाथ में जल, चावल, फूल, रुपये रखें पत्नी साथ हों तो उनका हाथ अपने हाथ के नीचे लगावें, बोलें-श्री विष्णु, श्री विष्णु, श्री विष्णु। शुभ सम्वत् 2073, कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां रविवासरे अमुक गोत्रेत्पन्न (गोत्र और अपना नाम बोलें) पत्नी साथ हो तो सप्तनीकोहम् परिवार हो तो सपरिवारस्योहंम, (यदि मित्र मण्डली हो तो)इष्टमित्रसहितोहम्। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश लक्ष्मी पूजनम् अहम करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ में रखी वस्तुएँ गणेश जी के समीप रख दें। अब हाथ में चावल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् अथवा ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः ।। कहकर लक्ष्मी जी पर चावल चढ़ावें।

आवाहन्- सर्व सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी धन धान्य समृद्धि दाता माँ मेरे इस स्थान पर आकर आसन पर विराज कर मेरे द्वारा की जाने वाली पूजा स्वीकार करें। पुष्पासनम् सर्मपयामि बोल कर चावल, फूल चढ़ा दें। एक दौने में फूल, चावल, जल गणेश जी -लक्ष्मी जी के आगे रखकर कहें अर्घ्यम समर्पयामि। गंगाजल (पानी) दोने में रखकर कहें ''आचमनीयम् समर्पयामि ''तदन्तर शुद्ध जल से स्नान करावें'' स्नानम् समर्पयामि ''इसके बाद पारद के गणेश जी -लक्ष्मी जी या चाँदी का रूपया कटोरे में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा इच्छानुसार चढ़ावें और कहें'' पंचामृत स्नानम् समर्पयामि ''शुद्ध जल से स्नान करावें'' स्नानम् समर्पयामि ''वस्त्र से पोंछकर पात्र में रख लें और नवीन (नया) वस्त्र पहनावें'' वस्त्रम् समर्पयामि ''मंगल प्राप्ति हेतु मंगलसूत्र (मौली) चढ़ावें'' मंगल सूत्रम् समर्पयामि ''गणेश जी को जनेऊ पहनावें'' यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ''लक्ष्मी जी को मोती की माला पहनावें'' मुक्ता मालाम् समर्पयामि ''गणेश जी पर चन्दन लक्ष्मी जी पर रोली'' गंधम् समर्पयामि ''चावल लगावें'' अक्षताम् समर्पयामि ''फूलमाला पहनावें'' पुष्पमाल्याम् समर्पयामि ''मीठा, खील, बतासे, खाड़ के खिलौने, पाँचों मेवा, आदि थाली में रखकर कहें'' भोजनम् समर्पयामि ''जल चढ़ावें'' आचमनीयम समर्पयामि ''फल चढ़ावें'' फल समर्पयामि ''गोला या नारियल चढ़ावें'' अखंड ऋतुफलम् समर्पयामि ''पान, सुपारी, लौंग, इलायची, कपूर'' ताम्बूल पुंगीफल आदि समर्पयामि ''दक्षिणा चढ़ावें'' शुभ दक्षिणाम्

शेष पेज 19 **पर**................

तांत्रोक्त नारियल

डा. रचना के भारद्वाज (पी.एचडी)
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तु शास्त्राचार्य,
अंक विशारद
नई दिल्ली

सभी शुभ कार्यो में नारियल का प्रयोग होता ही है, यह आप भली प्रकार जानते है। लेकिन जो अद्‌भुत हो, विलक्षण हो, अन्य से अलग हो, वह तांत्रिक वस्तु बन जाती है क्योंकि उसमें कुछ विशेष गुण होते है। इन्हीं विशेष गुणों के पारखी लोग ऐसी वस्तुओं को अपने कार्यो को सिद्ध करने के लिये प्रयोग करते है या प्रयोग करवाते है।

दुर्भाग्य नाश के लिये– तांत्रोक्त नारियल को किसी काले कपड़े में सिलकर घर के बाहर बांध दिया जाय तो उस घर पर नजर एंव दुर्भाग्य का प्रभाव नहीं पड़ता।

रोग निवारण के लिये– जो व्यक्ति प्रायः बीमार रहता है, उस व्यक्ति की अनामिका अंगुली से थोडा से खून इस नारियल पर छिटक दिया जाय और उन नारियल को अग्नि में जला दिया जाये तो इस व्यक्ति का रोग भी अग्नि में भस्म हो जाता है, ऐसी मान्यता है।

विपत्ति नाश के लिये– दीपावली की रात्रि में सात फुट काला धागा लेकर इस नारियल के ऊपर पूरा लपेट लें। किसी लाल कपड़े में लाल रूमाल में लपेट कर घर के सभी सदस्यों के ऊपर से 7 बार उवार कर (7 बार घुमा कर) किसी तालाब में विसर्जित कर आयें। इससे घर के सभी सदस्यों के ऊपर किसी भी प्रकार की विपदा होगी तो उसका नाश हो जायेगा। यह ग्रामीण तांत्रिक प्रयोग है, जो आज भी ग्रामीण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

शत्रु नाश के लिये– यदि आपका कोई शत्रु है और आप उससे अपना पिंड छुड़ाना चाहते है तो यह प्रयोग भी उसमें सहायक हो सकता है। 3 तात्रोंक्त नारियल लेकर उसे काजल से काला कर दें। अब तेल और सिन्दूर को मिलाकर गाढ़ा लेप बना लें अथवा किसी हनुमान मंदिर से ले आयें। इस लेप से तीनों नारियल पर अपने शत्रु के नाम का पहला अक्षर लिखें। अब तीनों नारियलों पर पूजा का रंगीन धागा (जिसे मौली, कलावा, नाडाछड़ी कहते है) उस पर पूरा लपेट दें, जिससे नीचे का कालापन न दिखने पायें। दीपावली मुहूर्त से पूर्व इस मंत्र की (ऊँ नमो भगवते शत्रुणां बुद्धि स्तम्भनं कुरू कुरू स्वाहा) एक माला जप कर नारियल को हाथ में लेते जाये और एक बार मंत्र को पढ़ कर किसी नदी, तालाब या सरोवर में विसर्जित कर आयें और पीछे मुड़कर न देखें। इससे आप शत्रुओं की पीड़ा से मुक्त होगें। यह प्रयोग जो स्त्रियाँ सौतन आदि से परेशान है वे भी कर सकती है।

पुत्र प्राप्ति के लिये– यदि कोई दम्पति पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखता है तो दीपावली के 9 दिन तक 11 तांत्रोक्त नारियल लेकर उस पर ऊँ श्रीं पुत्र लक्ष्म्यै नमः मंत्र की एक माला नित्य जप कर दुर्गानवमी को ही किसी तालाब में विसर्जित कर दें तो घर में अवश्य ही पुत्र उत्पन्न होगा तथा घर में सुख शान्ति बनी रहती है।

विवाह बाधा निवारण के लिये– यदि किसी भी सोमवार को 5 तांत्रोक्त नारियल लेकर कोई कुमारी कन्या ऊँ श्रीं वर प्रदाय श्री नमः मंत्र की पांच माला जपकर एक एक नारियल भगवान शिव को समर्पित करें और फिर वह लघु नारियल किसी शिव मंदिर में चढ़ा दे तो उसके विवाह में आने वाली बाधायें समाप्त होती है।

कार्य सिद्धि के लिये– यदि आप किसी विशेष कार्य के लिये जैसे नौकरी, इन्टरव्यू, शादी–विवाह आदि के कार्य के लिये जा रहे है तो इस नारियल पर कुंकुम का तिलक कर साक्षात रिद्धि सिद्धि विनायक मानकर अपने साथ ले जायें। कार्य सिद्ध होने पर उचित दक्षिणा के साथ गणेश मंदिर में अर्पित कर दें।

रिद्धि सिद्धि के लिये– यदि आपके घर में सभी प्रयासों के बाद भी आर्थिक सम्पन्नता नहीं आ पा रही है तो आप इन 11 तांत्रिक नारियलों को दीपावली के दिन सभी पर कुंकुम से ''गं'' अंकित कर किसी ताम्र पात्र में तांबे के लोटे में डाल दें। साथ ही यदि चांदी का सिक्का डाल सके तो और भी श्रेष्ठ है अथवा प्रचलित मुद्रा का सिक्का डाल दें। दीपावली के दूसरे दिन तक आप जो भी पाठ पूजा करें इस लोटे पर भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि अर्पित करें। दीपावली के तीसरे दिन किसी भी कुंए तालाब में घर के सभी सदस्यों के हाथ लगाकर विसर्जित कर दें। इससे

शेष पेज 19 पर ....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM

भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu

CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

धन बाधा कैसे दूर करें?

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता; अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

सभी पाठक गणों को दीपावली की शुभकामनाँये। महालक्ष्मी की कृपा सदैव आप व आपके परिवार पर बनी रहे। इसी शुभकामना के साथ यह लेख मैं लिख रही हूँ।

देवी महालक्ष्मी संपूर्ण ऐश्वर्य, चल अचल संपत्ति, यश कीर्ति एंव सकल सुख वैभव देने वाली साक्षात जगत माता नारायणी है। श्री गणेश जी समस्त विघ्नों के नाशक, अमंगलों को दूर करने वाले, सद्विद्या एंव बुद्धि के दाता है। कार्तिक अमावस्या अर्थात दीपावली के दिन इनकी सयुक्त पूजा अर्चना करने से कुटुम्ब परिवार में धन संपति का सुख चिरकाल तक बना रहता है।

इस वर्ष दीपावली का शुभ त्यौहार 30 अक्टूबर रविवार को मनाया जायेगा जो कि सुख का प्रतिपादन करने वाला होता है। दीपावली के पावन पर्व में गणेश लक्ष्मी इन्द्र आदि देव पूजन का क्रम सम्पूर्ण दिन एंव रात्रि निशीथ काल तक जारी रहता है। दीपावली का मुहुर्त मंत्र जप तथा सिद्धि तंत्र साधना आदि के लिये विशेष रूप से सिद्धिदायक होता है।

दीपावली के दिन प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठ कर स्नानादि नित्य कर्म से निवृत होकर स्वच्छ अथवा नवीन वस्त्र धारण करें। घर की स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखें तथा मन में भी स्वच्छ तथा पवित्र विचारों को धारण करें। अधीनस्थ कर्मचारी सेवकगण एंव अतिथिजनों का निश्छल भाव से सत्कार करते हुये उपहार और मिष्ठान आदि भेट करें।

दीपावली का पर्व विशेष रूप से धन की देवी लक्ष्मी जी की पूजा अनुष्ठान कर उन्हे अनुकूल बनाने के लिये मनाया जाता है ताकि सुख समृद्धि बराबर बनी रहे और व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहे।

यहाँ कुछ ऐसी विधियां प्रस्तुत है जिन्हे व्यवहार में लाकर धन सम्बन्धी मुसीबतों से छुटकारा पाया जा सकता है।

1. दीपावली पर श्री महालक्ष्मी पूजन के बाद श्री सूक्त कापाठ 11 बार करें व लक्ष्मी यंत्र पर रोजाना इत्र लगायें। दीपावली की रात्रि लक्ष्मी यंत्र पर कमल के पुष्प अर्पित करें। कमलगटटे की माला से लक्ष्मी मंत्र का जाप करें।

2. धनतेरस के दिन सिद्ध कुबेर यंत्र की स्थापना तिजोरी में करें व रुद्राक्ष की या स्फटिक की माला से यंत्र जाप करें व पंचोपचार पूजन करें। फिर नित्य माला करते रहें।

मंत्र ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्या द्यिपतेय धन धान्य समृद्धि ये देहि दापय स्वाहा।

3. एक चौकी पर दीपावली की रात्रि लाल वस्त्र बिछाकर पारद लक्ष्मी गणेश जी की स्थापना करें। उनका मंत्रोपचार पूजन करें। दीपावली के दिन शुभ मुर्हुत में इन दोनों की युगल पूजा करने से सभी विघ्न बाधाओं का शमन होता है। व्यापार व नौकरी में अच्छी तरक्की होती है। घर परिवार में सुख स्मृद्धि एंव मंगल का वास होता है।

4. श्यामा तुलसी के चारों ओर उगने वाली घास को पीले कपड़े में बांधकर दीपावली के दिन अपने कार्यस्थल पर रखने से कार्य में निरंतर उन्नति होती है व माँ लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

5. दीपावली की रात्रि शुभ मुर्हूत में 8 गोमती चक्र व 8 कौडियाँ पीले सिन्दूर में रखें व लक्ष्मी पूजन के समय स्वंय मां लक्ष्मी की मूर्ति के सम्मुख रखकर श्री सुक्त का पाठ करें व पंचोपचार पूजन करें। भाई दौज के पश्चात् इन्हे लाल वस्त्र में बांधकर अपने धन के स्थान में रखें। इससे जीवन में सदैव सफलता प्राप्त होती है व घर व्यवसाय में वरकत बनी रहती है। धनागमन के रास्ते सुगम हो जाते है।

6. दीपावली के दिन रात्रि में कच्चा सूत ले उसे शुद्ध केसर से रंग कर कार्यस्थल पर रखने से व्यवसाय में निरन्तर उन्नति होती रहती है। भगवान गणेश जी की कृपा सदा बनी रहती है। व्यक्ति का बुद्धि विवेक जाग्रत रहता है तथा वह धन कमाने के सही रास्ते पर चलता है।

7. घर या व्यवसाय स्थल पर दीपावली पर लक्ष्मी पादुकाओं

शेष पेज 19 **पर**...............

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

आध्यात्म ज्योतिष और प्रकाश पर्व दीपावली

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिष ऋषि , वास्तु ऋषि,
अंक विशारद, नजर दोष एवं हस्ताक्षर विशेषज्ञ
ज्योतिष प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
या देवी सर्वभूतेषु समृद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

प्रकाश ज्ञान का द्योतक है और दीप साधना का प्रतीक। ज्ञान और साधना के द्वारा ही जीवन और संस्कृति में शील, सौंदर्य एंव समृद्धि की अधिष्ठात्री मां महालक्ष्मी की प्रतिष्ठा की जाती है। प्रज्ज्वलित दीप मालिकाएं सजग साधना की द्योतक है। हमारी कामना यही होती है कि हमारे जीवन का पल पल इस दीप साधना के आलोक से प्रकाशित हो और हमारा मन एंव जीवन लक्ष्मी की विभूति से परिपूर्ण हो, यही ज्योति पर्व में लक्ष्मी पूजन का लक्ष्य है और धर्म उस साधना की पीठ है।

दीपावली पर्व मां लक्ष्मी के आहवान का विशेष दिन है तथा इस दिवस पर विधिवत् पूजन करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होकर साधक को संपत्तिवान बनाती है।

रोजमर्रा के सामान्य विचारों में यह कहा जाता है कि घर तो घरवाली से होता है। यह शास्त्र सम्मत सत्य भी है। इसलिये पत्नी को गृहलक्ष्मी हिन्दू मान्यता में स्वीकार किया गया है। एक पुराण कथा के अनुसार देवराज इन्द्र दीपावली पर्व पर अपनी गृहलक्ष्मी इंद्राणी की पूजा किया करते थे और इसी कारण वे ऐश्वर्यशाली थे। शास्त्रों में दीपावली के दिन साधक द्वारा अपली पत्नी का गृहलक्ष्मी के रूप में पूजन करने का विधान है यह प्रकारांतर लक्ष्मी के आहवान का शास्त्र सम्मत विधान है। जिसके फलस्वरूप वर्ष भर घर में सुख, वैभव, शांति और धन का साम्राज्य रहता है।

दीपावली एक दीपों के जगमगाने का पर्व है। इस रात्रि को प्रत्येक हिन्दु के घर किसी ने किसी प्रकार का प्रकाश किया जाता है जैसे घी अथवा तेल के दीपक, मोमबतियां अथवा बिजली के बल्ब आदि।

हम भूमिवासियों के लिये चन्द्रमा रात का स्वामी अथवा ईश है इसीलिए इसको राकेश कहते है। परन्तु दीपावली की रात्रि को ऐसा लगता है कि चन्द्रमा हमारी सृष्टि से बाहर हो गया है। वह दृष्टिगोचर नहीं होता है परन्तु गणित ज्योतिष की दृष्टि में यह होता है कि चन्द्रमा अमावस्या को जबकि दीपावली का पर्व मनाया जाता है सूर्य के समीपतम होता है और इसी कारण से वह सर्वथा सूर्य के प्रकाश में मानों स्नान कर रहा होता है। अतः वास्तव में हम कह सकते है कि अमावस्या की रात्रि को चन्द्रमा अधिकतम प्रकाश में होता है लेकिन वह हम पृथ्वी वासियों को दिखाई नहीं देता इसलिये हमको दीप जलाने पड़ते है।

फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा दोनों राज्य से सम्बन्धित है। सूर्य राजा है तो चन्द्रमा रानी। अमावस की रात को रानी राजा से मिलती है मानों दोनों प्रेम पूर्वक गले मिलते हों। भगवान राम तो राजाधिकराज है ही और सीता उनकी अतिशय प्रिय रानी। चौदह वर्ष के वनवास के बाद अमावस्या की रात्रि को ही उनका वैवाहिक सम्बन्ध अयोध्या में लौटकर हुआ था। वनवास में तो वे सन्यासियों के रूप में रहते थे। इस प्रकार राम और सीता का अमावस्या में मिलन ज्योतिष शास्त्र का अनुमोदन लिये हुये है।

ज्योतिष शास्त्र हमें बतलाता है कि और वस्तुओं के अतिरिक्त चन्द्रमा जनता का प्रतिनिधित्व भी करता है। भगवान राम के वनवास के दिनों में अयोध्या की जनता व्याकुल थी कि कब यह अवधि समाप्त हो और उन्हे अपने प्यारे सूर्य वंशी राजा के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो। सूर्य से ही सूर्य वंश चलता है। क्या विचित्र संयोग है कि जमना ने, जिसका प्रतिनिधित्व चन्द्रमा करता है, एक ऐसा दिन अपने राजा के स्वागत के लिये चुना जबकि प्रकृति में भी जमना चन्द्रमा राजा से सूर्य मिल रही हो।

ज्योतिष शास्त्र में हमे शिक्षा मिलती है। कि सूर्य आत्मा है, अपने निज का स्वरूप है और चन्द्रमा मन है (चन्द्रमा मनसे जातः) अतः अमावस्या एक ऐसा अवसर है जबकि मन (चन्द्रमा) पूर्ण रूप से आत्मा (सूर्य) के समीपतम होकर आत्मरूप होता है। उस दिन

शेष पेज 15 पर................

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरुम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

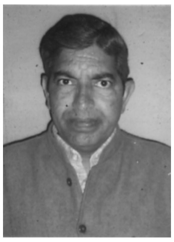

योग साधना

प्रभुदयाल गुप्ता
आगरा

ईश्वर ने मानव को अमूल्य जीवन दिया है और सभी जीवों में श्रेष्ठ बुद्धिमान भी बनाया है। मनुष्य को चाहिए कि इस अमूल्य एंव अनुपम भेंट को वे सुरक्षित रखें। इसको हम दो प्रकार से सुरक्षित रख सकते है– प्राकृतिक और कृत्रिम विधि द्वारा। प्राकृतिक रूप में हम अपने को योग साधना द्वारा स्वस्थ रख सकते हैं और कृत्रिम विधि से आधुनिक मैडीकल चिकित्सा द्वारा।

पूर्वकाल में हमारे ऋषि मुनि जंगलों में गहन तपस्या किया करते थें, इससे उनको लम्बी और इच्छा मृत्यु तक प्राप्त थी। जंगलों में वे देखते थे कि इन जानवरों की न कोई देखभाल करता है, न ही कोई चिकित्सा करता है। परन्तु फिर भी अपने को स्वस्थ रखते है क्योकि वे सभी प्रकृति के साथ मिलकर चलते है, कुछ आसन और भोजन आदि के द्वारा अर्थात् अपने शरीर को विशेष स्थिति में मोड़ते है। जानवर जैसे ही अपनी स्थिति बदलते है। वैसे ही वह अपने शरीर को भी विशेष स्थिति में मोड देते है और चलने, दौडने और भागने में वह इस प्रकार अपना बचाव करते है और दूसरी स्थिति है भोजन न ग्रहण करना उपवास रखना। यदि सभी जानवर अपने को अस्वस्थ समझते है, वैसे ही वह अपना भोजन, जल आदि छोड़ देते है। केवल श्वांस प्रक्रिया और विश्राम पर रहते है। इस प्रकार अल्पसमय एक दो दिन में स्वस्थ होकर अपनी दैनिक प्रक्रिया प्रारम्भ कर देते है। इस प्रकार सम्पूर्ण आसन और क्रिया ऋषि–मुनियों ने वन्य जीवों से ही ली है। केवल एक ही आसन ऐसा है जो मनुष्य से लिया गया है। वह भी उसकी अन्तिम अवस्था में अर्थात् मृत्यु शैया पर जाने पर जिसको हम शवासन कहते है। यह आसन है तो मनुष्य की अन्तिम अवस्था का, परन्तु यह आसन करने से मनुष्य अमृत की प्राप्ति करता है। अर्थात् हमारा मन और तन पूर्णतः स्वस्थ हो जाता है। हद्रय बलवान हो जाता है। यदि हम भी कुछ आसन प्रतिदिन प्रातः की बेला में कर लें तो स्वस्थ रह सकते है और कृत्रिम रूप में चिकित्सा द्वारा अपने को स्वस्थ रख सकते है। दवा अथवा शल्य क्रिया द्वारा या अपने शरीर का श्रृंगार आदि के द्वारा, जिसमें स्नान, साज सज्जा आदि है, इस प्रकार भी हो इस नर तन को संसार में स्वस्थ रख सकता है। अतः आप प्रातः के अल्प सुख को त्याग कर लंबा सुख पा सकते है अर्थात् योग साधना द्वारा हम अपने जीवन को लंबा और स्वस्थ रख सकते है और चाहे तो बड़े योगी बनकर इच्छा मृत्यु भी प्राप्त कर सकते है। हद्रय को पुष्ट करने के लिए योग साधना आदि करनी चाहिए। यदि हद्रय के किसी विकार से पीडित है तो आधुनिक चिकित्सा द्वारा हद्रय को ऐलोपैथी चिकित्सा द्वारा पुष्ट कर लम्बा जीवन जी सकते है। चिकित्सक के परामर्शनुसार

योग साधना के नियम–

साधना प्रातः ही करे यदि प्रातः समय नही मिले तो सांयकाल कर सकते है।

साधना खाली पेट ही करें चाय के साथ दो चार बिस्कुट ले सकते है। वैसे भोजन के 4–5 घंटे के बाद और अल्पकार के 2 घंटे बाद साधना कर सकते है।

साधना में ढीले वस्त्र ही पहिनें जिससे शरीर के अंगो को में रूकावट न आयें।

साधना फर्श, दरी पर कम्बल या सूती चादर बिछाकर करें। साथ में एक रूमाल या छोटा तौलिया अवश्य रखें।

साधना नंगे पैर न करें।

साधना बैठकर, खड़े होकर और लेट कर मुख पूर्व दिशा में करें। लेटकर सिर पूर्व दिशा में करें। सिर उत्तर दिशा में न करें।

यदि साधना स्थान करके करें तो उत्तम है। यदि ग्रीष्म ऋतु है तो साधना के आधे घंटे बाद पुनः स्थान कर सकते है।

साधना के अन्त में शवसान या शिथिलीकरण क्रिया करना न भूलें। 10–15 मिनट का विश्राम 10 घंटे की थकान को मिटा सकता है।

साधना के अन्त में मौसम के अनुसार थोडा सा जल अवश्य पी लें जिससे गले की खुशकी मिट जाये और मूत्र त्याग अवश्य करें।

श्वासं नाक से ही लें और गहरा लें। श्वांस मुंह से नहीं लें।

आसन धैर्यता और धीरे धीरे करें।

आसन मौसम के अनुसार खुले में या छाया में करें।

माता बहिनों को विपरीत परिस्थिति में आसन निषेध है और बीमारी में भी आसन निषेध है।

आसनों के मध्य विश्राम करते रहे।

प्रातः काल 5–6 तुलसी के पत्ते पानी से निगल लें। स्मरण शक्ति बढ़ाती है। पेट के बढ़े अम्ल को खत्म करती है।

बीड़ी सिगरेट पीना, गुटखा, तम्बाकू खाना व मद्य पान का परित्याग करें।

योगसाधना में श्रद्धा, विश्वास और प्रेम की लग्न साधें। करें योग रहें निरोग। हरिओम् शान्ति शान्ति शान्ति!!!

दीपावली पूजन का समय सन् 2016

30–10–2016 रविवार के दिन पूजन समय प्रातः 7:50 से दोपहर 12:01 तक, दोपहर 1:56 से सायं 4:51 बजे तक, सांय 6:27 से 10:36 बजे तक, रात्रि 01:01 से 03:17 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमें सर्वश्रेष्ठ पूजन समय प्रातः 7:50 से 10:07 बजे तक, दोपहर 1:56 से 2:48 बजे तक, सायं 6:27 से 8:24 बजे तक एवं रात्रि 1:37 से 3:14 बजे तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्राप्त होगी। राहुकाल का समय सायं 04:11 से 05:35 तक।

दिशा एंव राशियों के अनुकूल करें दीपावली की साज सज्जा

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

दीपावली मुख्यतः महालक्ष्मी को प्रसन्न करने का पर्व है जिससे माता का आर्शीवाद वर्ष भर बना रहे। लक्ष्मी जी के स्वागत हेतू हम काफी प्रयास एंव तैयारियाँ करते है। यदि हम ज्योतिष एंव वास्तु सम्मत तरीको से घर की साज सज्जा करते हैं तो हम निश्चय ही वर्षभर मां लक्ष्मी की कृपा पा सकते है। निवास स्थान की साफ सफाई एंव साज सज्जा द्वारा हम वास्तु से होने वाले शुभ फलों को प्राप्त कर सकते है।

मेष एंव वृश्चिक राशि– दक्षिण मुखी भवन– यह लोग अपने घर का मुख्य द्वार लाल रंग का रखें। लाल रंग की बिजली की झालरों से घर की सजावट करें। लाल वस्तु धारण करे हुए पंचमुखी हनुमान जी का चित्र मुख्य द्वार के ऊपर लगायें। घर के मुख्य द्वार पर सभी प्रकार के मांगलिक चिन्ह लाल रंग से लगाये। पेडों पर भी लाल बिजली की झालरों का प्रयोग करें। लाल रंग की बंदनवार का प्रयोग करें। यदि मुख्य द्वार के पास तुलसी जी का गमला हो तो उस पर लाल रंग की चुंनरी उड़ायें। इसके अतिरिक्त लाल रंग का पायदान या कालीन विछायें।

वृष, तुला एंव कर्क उत्तर पश्चिम मुखी भवन– यह लोग अपने घर का मुख्य द्वार सफेद या सिल्वर कलर से पेंट करायें। यह जातक सफेद रंगों की झालरों से भवन को सजायें। वरूण भगवान का चित्र मुख्य द्वार के ऊपर अंकित करें।

रूपहले रंग के स्वास्तिक के मांगलिक चिन्ह मुख्य द्वार पर लगायें। मुख्य द्वार पर छः छल्ले वाली विंड चाइन्स लगाये। दीपावली पर पारद के लक्ष्मी गणेश एंव स्फटिक का श्री यंत्र स्थापित करें। चांदी के लक्ष्मी गणेश की भी स्थापना शुभ फलदायी रहेगी।

मिथुन एंव कन्या उत्तर मुखी भवन– मुख्य द्वार पर हरे रंग की झालर लगायें। मुख्य द्वार पर हरा रंग करवांए। हरे भरे पेडों से घर के द्वार को सजाऐं एंव हरी भरी बेलें ऊपर चढ़ती हुई लगाएं। हरे रंग के पायदान एंवकालीन विछाकर हरे रंग के मिटटी के तोतों एंव हरी मूर्तियों से घर की साज सज्जा करें। मनी प्लांट लगायें। तुलसीजी के पौधे भी लगा सकते है। भगवान कुबेर की मूर्ति की स्थापना करें एंव विधिवत पूजन करें।

सिंह राशि पूर्व मुखी भवन– मुनष्य द्वार पर मैरून रंग की झालरें लगायें। लाल रंग के लक्ष्मी चरण मुख्य द्वार पर लगायें। लाल रंग का बिजली का स्वास्तिक लगायें। लाल रंग की बंदनवार लगा सकते है। उगते हुए सूर्य का चित्र लगायें। ताबें का सूर्य भी लगा सकते है।

मकर एंव कुंभ पश्चिम मुखी भवन– मुख्य द्वार पर नीले रंग की बिजली की झालर लगायें। घर का रंग रोगन आसमानी रखें। मुख्य द्वार गहरे नीले रंग रखें। मुख्य द्वार पर गणपति का चित्र लगाये। नीले रंग के पायदानों एंव कालीन का प्रयोग करें।

धनु एंव मीन उत्तर पूर्वी मुखी भवन– पीले रंग की झालरों से सजावट करें। बिजली का पीलें रंग का स्वास्तिक लगायें। हल्दी से मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह बनायें। पीले वस्त्र धारण करें एंव मुख्य द्वार पर गणेश जी का चित्र लगायें। घर का रंग रोगन हल्के पीलें रंग का करायें। सुनहरी घंटियों की बंदनबार घर के मुख्य द्वार पर लगायें।

उपरोक्त उपायों द्वारा आप इस दीपावली को अपने लिये अत्यधिक शुभ बना सकते हैं एंव मां लक्ष्मी की कृपा सालभर बनी रहेगी।

❋❋❋

1500/– की खरीद पर पायें
15% की छूट
3100/– की खरीद पर पायें
25% की छूट

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us
and get 15% discount*
*valid for a single user

इस दीपावली 2016 पर करने योग्य कुछ श्रेष्ठ उपयोगी उपाय

पं. दयानन्द शास्त्री
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन में हल्दी गांठ भी रखें। पूजन पूर्ण होने पर हल्दी की गांठ को घर में उस स्थान पर रखें, जहां धन रखा जाता है।

दीपावली के दिन यदि संभव हो सके तो किसी किन्नर से उसकी खुशी से एक रूपया लें और इस सिक्के को अपने पर्स में रखें। बरकत बनी रहेगी।

दीपावली के दिन घर से निकलते ही यदि कोई सुहागन स्त्री लाल रंग की पारंपरिक ड्रेस में दिख जाए तो समझ ले आप पर महालक्ष्मी की कृपा होने वाली है। यह एक शुभ शकुन है। ऐसा होने पर किसी जरूरतमंद सुहागन स्त्री को सुहाग की सामग्री दान करें।

दीपावली की रात में लक्ष्मी और कुबेर देव का पूजन करें और यहां दिए एक मंत्र का जप कम से कम 108 बार करें।

मंत्रः ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय, धन–धान्यधिपतये धन–धान्य समृद्धि मम देहि दापय स्वाहा।

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन के बाद घर के सभी कमरों में शंख और घंटी बजाना चाहिए। इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा और दरिद्रता बाहर चली जाती है। मां लक्ष्मी घर में आती है।

महालक्ष्मी के पूजन में गोमती चक्र भी रखना चाहिए। गोमती चक्र भी घर में धन संबंधी लाभ दिलाता है।

दीपावली पर तेल का दीपक जलाएं और दीपक में एक लौंग डालकर हनुमानजी की आरती करें। किसी हनुमान मंदिर जाकर ऐसा दीपक भी जला सकते है।

रात को सोने से पहले किसी चौराहे पर तेल का दीपक जलांए और घर लौटकर आ जाएं। ध्यान रखें पीछे पलटकर न देंखें।

दीपावली के दिन अशोक के पेड़ के पत्तों से वंदनद्वार बनांए और इसे मुख्य दरवाजे पर लगाएं। ऐसा करने से घर की नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाएगी।

किसी शिव मंदिर जाएं और वहा शिवलिंग पर अक्षत यानी चावल चढाएं। ध्यान रहें सभी चावल पूर्ण होने चाहिए। खंडित चावल शिवलिंग पर चढ़ाना नहीं चाहिए।

अपने घर के आसपास किसी पीपल के पेड़ के नीचे तेल का दीपक जलाएं। यह उपाय दीपावली की रात में किया जाना चाहिए। ध्यान रखें दीपक लगाकर चुपचाप अपने घर लौट आए, पीछे पलटकर न देंखें।

यदि संभव हो सके तो दीपावली की देर रात तक घर का मुख्य दरवाजा खुला रखें। ऐसा माना जाता है कि दिवाली की रात में महालक्ष्मी पृथ्वी पर भम्रण करती है और अपने भक्तों के घर आती है।

महालक्ष्मी के पूजन में पीली कौडियां भी रखनी चाहिए। ये कौडिया पूजन में रखने से महालक्ष्मी बहुत ही जल्दी प्रसन्न होती है। आपकी धन संबंधी सभी परेशानियां खत्म हो जाएंगी।

दीपावली की रात लक्ष्मी पूजा करते समय एक थोडा बड़ा घी का दीपक जलाएं, जिसमें नौं बत्तियां लगाई जा सके। सभी 9 बत्तियां जलाएं और लक्ष्मी पूजा करें।

दीपावली की रात में लक्ष्मी पूजन के साथ ही अपनी दुकान, कम्प्यूटर आदि ऐसी चीजों की भी पूजा करें जो आपकी कमाई का साधन है।

लक्ष्मी पूजन के समय एक नारियल ले और उस पर अक्षत, कुमकुम, पुष्प आदि अर्पित करें और उसे भी पूजा में रखें।

दीपावली के दिन झाडू अवश्य खरीदना चाहिए। पूरे घर की सफाई नई झाडू से करें। जब झाडू का काम न हो तो उसे छिपाकर रखना चाहिए।

इस दिन अमावस्या रहती है और इस तिथि पर पीपल के वृक्ष को जल अर्पित करना चाहिए। ऐसा करने पर शनि के दोष और कालसर्प दोष समाप्त हो जाते हैं।

प्रथम पूज्य श्रीगणेश को दूर्वा अर्पित करें। दूर्वा की 21 गांठ गणेशजी को चढाने से उनकी कृपा प्राप्त होती है। दीपावली के शुभ दिन यह उपाय करने से गणेशजी के साथ महालक्ष्मी की कृपा भी प्राप्त होती है।

दीपावली से प्रतिदिन सुबह घर से निकलने से पहले केसर का तिलक लगाएं। ऐसा हर रोज करें, महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी।

यदि संभव हो सके तो दीपावली पर किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें। ऐसा करने पर शनि और राहु केतु के दोष शांत होंगे और कार्यो में आ रही रूकावटें दूर हो जाएंगी।

महालक्ष्मी के पूजन में दक्षिणावर्ती शंख भी रखना चाहिए। यह शंख महालक्ष्मी को अतिप्रिय है। इसकी पूजा करने पर घर में सुख –शांति का वास होता है।

महालक्ष्मी के चित्र का पूजन करें जिसमें लक्ष्मी अपने स्वामी भगवान विष्णु के पैरों के पास बैठी है। ऐसे चित्र का पूजन करने पर देवी बहुत जल्द प्रसन्न होती है।

दीपावली के पांचों दिनों में घर में शांति बनाए रखें। किसी भी प्रकार का क्लेश बाद विवाद न करें। जिस घर में शांति रहती है। वहां देवी लक्ष्मी हमेशा निवास करती है।

दीपावली पर ब्रह्मम मुहूर्त में उठें और स्नान करते समय नहाने

शेष पेज 19 पर.................

सेवा करने की हो ललक

सुरेश अग्रवाल
आगरा

सच्ची सेवा करने वाला सदैव प्रत्येक व्यक्ति में और हर स्थान पर भगवान के दर्शन करता है। सेवा करना उसका स्वभाव बन जाता है। वह ऊँच नीच, अपना पराया, मित्र शत्रु, कुछ भी नही देखता। उसे जब भी सेवा करने का अवसर मिलता है। वह तत्पर हो जाता है और अपना सौभाग्य समझता है। सेवा करने वाला कोई दुकान भी नहीं खोलता और न मीड़िया में कोई छपास चाहता है। सेवा का कोई विज्ञापन भी नहीं करता है। वह जरूरत मंद के पास स्वयं पहुंचता है। सेवा का अर्थ है कि हमारे पास जो कुछ भी वस्तु उपलब्ध है, वह सब सेवा के लिए ही है।

ध्यान रखिए और स्वीकार कीजिए कि हमको भगवान ने जो कुछ भी दिया है, सब उसी का है। हम तो मात्र उस पदार्थ के कस्टोडियन है। उसे अपना मानकर केवल अपने लिए ही भोग करना बेईमानी है। इमें इस बेईमानी से बचना चाहिए। प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का वास है। अतएव उनके जिस रूप को, जिस वस्तु की आवश्यकता हो और वह यदि हमारे पास हो तो हमें उस भगवान की वस्तु को उस जरूरतमन्द को नम्रता पूर्वक समर्पित कर देना चाहिए।

दूसरों को सताने वाले, खूनी, डकैती, व्यभिचारी, पराया धन हरण करने वाले, बेईमान, स्वार्थी, मवाली तथा अन्य पाप कर्म करने वाले लोगों की उनके काम में सहायता या सहयोग करना सेवा नही है– यह तो पाप का समर्थन है। सेवा करने वाले व्यक्ति में त्याग ,नम्रता तथा विनय का होना परमावश्यक है। हम जिसकी सेवा करते है, उसको छोटा और स्वंय को ऊंचा मानने लगते हैं जो सही नहीं है। सेवा का बदला चाहना, कृतज्ञता की कामना करना, सेव्य के कृतज्ञ न होने पर नाराज होना, उससे द्वेष करना आदि दोष सेवा के पवित्र स्वरूप को ही नष्ट कर देते है। इसके विपरीत हमें सेवा प्राप्त करने वाले के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए क्योकि उसने हमें सेवा करने का अवसर प्रदान किया और दातव्य वस्तुएं स्वीकार की हैं।

हम जिसकी सेवा करते हैं, उसके पूर्व इतिहास के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं करनी चाहिए और न उसकी मजबूरी का प्रचार प्रसार करना चाहिए। अपने मन में भी कभी यह भाव नहीं आने देना चाहिए कि भविष्य में हमारे प्रति उसका व्यवहार कैसा होगा, हमें तो उसकी वर्तमान जरूरतों का आंकलन करना चाहिए और अपने साधन, शक्ति और श्रम के अनुसार उसकी सेवा करनी चाहिए।

सेवा करने वाला न तो अपनी प्रशंसा चाहता है, न वह दूसरों पर हुकूमत करना चाहता है, न वह किसी का अपमान करता है, न वह किसी को अज्ञानी मूर्ख मानता है, न वह किसी की निन्दा चुगली करता है, और न वह कभी किसी से अपने लिए सम्मान, आराम, अच्छे भोजन अथवा मंच पर मुख्य स्थान की कामना करता है।

सेवा करने वाले में प्राणी मात्र की सेवा की भावना सहज और अंहकार विहीन रहती है। वह यथा सम्भव सेवा को गुप्त रखना चाहता है। किसी के चिंत्र में सेवा का भाव आना ही भगवान का विशुद्ध तथा मधुर प्रसाद है। ईश्वरीय कृपा के कारण ही वह सेवा के लिए प्रेरित होता है। यह कोई लेने देन का व्यापार नहीं है।

सेवा का क्षेत्र अति व्यापक है। सेवा का एक भाव यह भी हैं दूसरों का दुख देखकर दुखी होना और सुख देखकर सुखी होना। यह भाव रखने से दुखी व्यक्तियों का मानसिक बल बढ़ेगा और जो सुखी है, उनको अच्छा लगेगा। दूसरों के दुख दूर करने हेतु जितना हमारे वश में हो, उतना अवश्य करना चाहिए व निरन्तर करते रहना चाहिए। सेवा करने से जो मान और पहचान मिलती है वह तो अवश्य मिलेगी, परन्तु इसके लिए राजी हो जाना एक गम्भीर भूल है। यह कामना भगवान को नकारती है और सेवा करने वाले की सेवा का मूल्य शून्य हो जाता है।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

सुख समृद्धि एंव व्यापार में उन्नति के लिये दीपावली में किए जाने वाले कुछ विशेष उपाय

अजय दत्ता
ज्योतिष भूषण, वास्तु रत्न
आगरा

आप सभी को दीपावली के इस पावन पर्व की बहुत सारी शुभकामनाएं।

निम्नलिखित उपायों को आप खुद कर सकते है यह काफी सरल हैं एंव अचूक रामबाण की तरह काम करते है।।

1. एक सुपारी और एक सिक्का लें और इसे पीपल के पेड़ के नीचे शनिवार की रात्रि को रख दें और इतवार की सुबह को वहां से एक पीपल का पत्ता भी तोड़ लायें उस पीपल के पत्ते को अपनी तिजोरी में रखें व्यापार में वृद्धि अवश्य होगी।

2. दीपावली से शुरू कर तेल का दीया हर शनिवार को पीपल के पेड़ के नीचे जलाएं यह उपाय वर्ष भर करना है सफलता जरूर प्राप्त होगी।

3. काले तिल का उतारा कर उत्तर दिशा की तरफ फेंके। कोई भी नजर दोष से मुक्ति प्राप्त होगी।

4. दीपावली की रात्रि को व्यापार वृद्धि यन्त्र की यथाविधि पूजन कर उस पर काला काजल लगायें फिर काली डोर से इसे बांध कर नागकेशर के साथ अपनी तिजोरी में रखें व्यापार में चारों ओर से सफलता प्राप्त होगी एंव रूके हुए कार्य पूरे होंगें।

5. श्वेतार्क गणपति के मूल को जलाकर उसके भस्म का तिलक रोज लगाने से आर्थिक वृद्धि होती है।

6. 5 लौंग को कपूर में जलाएं और इस भस्म का तिलक लगायें। आपके समस्त शत्रु धीरे धीरे पराजित होते जायेंगें।

7. 11 लक्ष्मी कौड़ी का पूजन कर घर के किसी कोने में गाड़ दें फ्लैट्स में रहते हैं तो गमले में भी गाड़ सकते है। यह उपाय रात्रि को 12 बजे करना है या दिपावली की रात्रि को स्थिर लग्न में करना है सुख और समृद्धि बनी रहेगी।

8. 7 कौडियों का पूजन कर सिंदूर के साथ एक डिब्बी में रख कर अपनी तिजोरी में रखें। आर्थिक लाभ होगा एंव कर्ज से भी छुटकारा मिलेगा।

9. जॉब में प्रमोशन के लिये 11 कौड़ियों को लक्ष्मी मंदिर में चढायें एं श्रीं ह्रीं क्लीं। मंत्र का जाप 7 माला करें और फिर कौडी को लक्ष्मी मंदिर में चढ़ा दें।

10. एक लाल कपडे में एक एकाक्षी नारियल, कामिया सिंदूर, अक्षत और लाल फूल बांध कर पहले माँ लक्ष्मी की यथाविधि पूजन करें। फिर सारी साम्रगी को लाल कपड़े में बांध कर तिजोरी में रखने से आर्थिक उन्नति वर्ष भर रहती है।

11. 12 गोमती चक्र ले कर एक लाल कपड़े में बांधे। दिवाली की रात्रि को स्थिर लग्न में माँ लक्ष्मी का यथाविधि पूजन कर इस पोटली को अपने ऑफिस के मुख्य द्वार की चौखट में बांधें ताकि इसके नीचे से होकर ग्राहक आपसे मिलने आये यह उपाय आपके व्यापार में पूर्ण उन्नति कारक स्थितियाँ पैदा करता है।

12. पारद लक्ष्मी गणेश की मूर्ति की स्थापना अपने घर के पूजा स्थान में करें। 7 कौड़ियाँ उन पर वारते हुए माँ लक्ष्मी के चरणों में रखें। यह पूरे 27 दिन तक रखना है। फिर इन कौड़ियों को प्रवाहित कर दें। जब ऐसा करें तो दक्षिण दिशा की तरफ मुंह कर निम्न मंत्र का पाठ करें ऊँ श्रीं ह्रीं महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ स्थिर फट।।

13. कपूर और रोली की भस्म को अपनी तिजोरी में रखें। आर्थिक लाभ अवश्य होगा।

14. 3 गोमती चक्र, तीन कौड़ी और तीन काली हल्दी को एक पीले कपडे में बांध कर दिवाली की रात्रि को पूजन कर अपनी तिजोरी में रखें। ना कोई नजर दोष होगा, ना ही घाटा। आर्थिक लाभ और सर्वआयामी उन्नति अवश्य होगी।

इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि ये सारे उपाय दीपावली के पांच शुभ दिनों में किये जा सकते है। लेकिन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। दीपावली के दिन में स्थिर लग्न में मां लक्ष्मी का पूजन एंव सारे उपायों का भी पूर्ण कार्य... ऐसा करने से बर्ष भर सुख समृद्धि रहती है एंव कोई भी विपदा आने से पहले ही समाप्त हो जाती है।

आप सभी को दीपावली की बहुत बहुत शुभकामनायें।।

❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

सूर्य भेदी प्राणायाम

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं
कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

हमारे देश में तीन प्रकार की ऋतुएं होती है। सर्दी, गरमी और बरसात। जिसमें कि सर्दी के मौसम का आगमन होने वाला है। सर्दी के मोसम में प्रत्येक व्यक्ति को जुकाम, खांसी, कफ शरीर में अकडन आदि की शिकायत अधिकतर रहती है। मनुष्य की इन शारीरिक सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए प्राणायाम बहुत उपयोगी है। इन प्राणायाम में सूर्य भेदी प्राणायाम सर्दी के मौसम में सबसे उपयोगी है।

विधि– सर्वप्रथम किसी ध्यानात्मक आसन में बैठें। कमर मेरूदंड सीधा करें। बायां हाथ ज्ञान मुद्रा में रखें व दायें हाथ की सहायता से दायीं नासिका से नियंत्रित गति श्वास लें। फिर कुंभक करे, जालंधर बंध लगाएं। फिर धीरे जालंधर बंध हाथ में, नियंत्रित गति से रेचक करें। यह सूर्य भेदी प्राणायाम हुआ। इसी तरह बार बार प्राणायाम करें।

लाभ–

1. यह प्राणायाम बुढापा तथा मृत्यु को दूर करता है।
2. इससे कफ दोष दूर होता है।
3. इस प्राणायाम से मोटापा कम होता है।

सावधानियां–

1. जिन्हे पित्त ज्यादा बनता हो। वे इस प्राणायाम को न करें।
2. सूर्य भेदी एक शक्तिशाली प्राणायाम है। इसका अभ्यास एक कुशल मार्गदर्शक के मार्गदर्शन में ही करें।
3. भोजन के बाद यह प्राणायाम कभी न करें।
4. गरमियों में इस प्राणायाम का अभ्यास न करें।

❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे...............

आत्मा के प्रकाश से मन आत्मरूप हो जाता है। यह अवस्था मनुष्य का अन्तिम ध्येय है।

अतः अमावस्या आध्यात्मिक दृष्टिकोण से मन के आत्मरूप हो जाने को दर्शाती हुई ज्योतिष शास्त्र अर्थ की गरिमा को प्रकट करती है। उपरोक्त विवेचन से आपने देखा होगा कि मन के लिए अमावस्या से बढ़ कर और कोई महत्पूर्ण दिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नहीं है।

मौलिक और आर्थिक दृष्टि से सूर्य और चन्द्रमा का सामिप्य भले ही शुभ फल प्रद न हो परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि कोण से अमावस्या से अच्छा और कोई प्रतीक नहीं हो सकता।

एक और स्थिति भी है जबकि चन्द्रमा उच्च होता है वह अपनी शुभमय अवस्था में होता है। जब जब चन्द्रमा वृष राशि में तृतीया अंश में स्थित होता है, इस स्थिति में भी चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र में होता है। कृतिका सूर्य का नक्षत्र होने से ही तो, चन्द्रमा को उच्चता प्रदान करता है क्योंकि सूर्य (आत्मा) को प्राप्त किये बिना मन की गति नहीं।

यह भी कोई साधारण बात नहीं कि संसार की बहुत सी आध्यात्मिक विभूतियों ने अमावस्या को प्राण त्यागे मानो उनका मन उस समय आत्मा में लीन हो गया । (सूर्य चन्द्रमा में जब मिला) महर्षि दयानन्द की मृत्यु उसी रोज हुई थी। तीर्थांकर महावीर स्वामी ने भी इसी रोज निर्वाण प्राप्त किया था। स्वामी रामतीर्थ की तो बात ही निराली है क्योकि उनका जन्म अमावस्या को, उनका सन्यास अमावस्या को और उनकी जल समाधि भी अमावस्या को ही हुई।

इस प्रकार दीपावली केवल मात्र दिये जलाकर और मिठाई खाकर बिता देने वाला दिन नहीं है। इस पर यदि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से विचार किया जाये तो हमें मालूम होगा कि मन और आत्मा के कई भेदों को प्रकट कने वाला दिन है–दीपावली।

इस पर्व का एक उद्देश्य देश के स्वास्थ्य को श्रेष्ठ करना भी है। वर्षा ऋतु में धूप की कमी तथा विशुद्ध जलभाव के कारण वायु मण्डल में रोग कीटाणु व्याप्त हो जाते है। मच्छरों की बहुतायत से मलेरिया आदि रोग विशेष रूप से फैलते है और नागरिकों का स्वास्थ्य अपने स्वाभाविक स्तर से निम्न हो जाता है। कार्तिक में शरद ऋतु अपने पूर्ण विकास पर होती है। अब तक लोग प्रायः घरों से बाहर खुले में सोते थे। परन्तु अब घरों में सोने की ऋतु आरम्भ हो गई। अतः यह परमावश्यक है कि उन घरों को साफ स्वच्छ किया जाये। इस अवसर पर लोग अपने घरों को स्वच्छ करते है। गन्दगी आदि हानिकारक तत्वों को दूर किया जाता है। दीप गुंज से प्राप्त होने वाला प्रकाश तथा उष्णता वर्षाजन्य रोग कीटाणुओं के विनाश में सर्वथा समर्थ होते है।

इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उपासना में अद्भुत शक्ति है। जीवन की किसी भी कष्टमय स्थिति से छुटकारा पाने के लिये पूर्ण निष्ठा के साथ इस का मनन कर देखिये– आपको विश्वास हो जायेगा। आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

❋❋❋

मासिक राशिफल

16 अक्टूबर– 15 नबम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-अर्थ हानि होने का भय रहेगा। कारोबार से लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। पत्नि सुख से लाभ होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। मित्रों से मेल बढ़ेगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– धन हानि होने की संभावना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। अपमान होने का भय रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। आय से व्यय अधिक होगें। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नई योजनाओं से भी लाभ की प्राप्ति न होगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेगें। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– भाइओं के साथ मन-मुटाव की स्थिति बनेगी। पत्नि से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें। नौकरी मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। नई योजनाओं से लाभ की प्राप्ति होगी। भाइयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। विवादों से दूर रहें। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से बचें। नई योजनायें बनायेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। घरेलू परेशानिया खत्म नहीं होगी। भाईयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– नई योजनाओ से हानि होने की संभावना रहेगी। इस माह में हानि होने का भय लगा रहने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। नौकरी मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में स्वास्थ्य खराब होने का भय रहेगा। नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। पत्नि से शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची-कार्य मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। कारोबार से लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। पत्नि सुख से लाभ होगा।

पुष्पित पारासर

ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नवम्बर
16. कार्तिक स्नान प्रा. **19**. करवाचौथ व्रत, श्री गणेश चतुर्थी व्रत **22**. अहोई अष्टमी **26**. रमा एकादशी व्रत **28**. प्रदोष व्रत, धन तेरस (धनवन्तरी जयंती) **29**. नरक चौदश **30**. अमावस्या, श्री महालक्ष्मी पूजन (दीपावली) **31**. श्री गोवर्धन पूजा (अन्नकूट), श्रीमती गांधी पु. दि, सरदार बल्लभ भाई पटेल जं.	**1**. भाई दूज **3**. श्री विनायक चौथ **5**. पाण्डव पंचमी **6**. सूर्य षष्ठी **7**. जलराम जयंती **8**. गोपाष्टमी **9**. अक्षय नवमी **11**. देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह **12**. गुरुण द्वादशी (उड़ीसा) **13**. बैकुण्ठ चौदस **14**. पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती, पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दिवस, बाल दिवस

गृहारम्भ मुहूर्त

अक्टूबर– नहीं है। **नबम्बर**– 02, 11

गृह प्रवेश मुहूर्त

अक्टूबर – नहीं है। **नबम्बर**– 2, 11, 12,

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अक्टूबर – 16, 17

नबम्बर– 02, 10, 11, 12

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अक्टूबर – 16, 28, 30,

नबम्बर– 02, 07, 11,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
16 ता. प्रातः 11:12 से रात्रि अंत 06:16 तक	02 ता. सू.उ. से सांय 05:57 तक
18 ता. सू.उ. से रात्रि 02:29 तक	06 ता. सू.उ. से रात्रि 03:52 तक
19 ता. सू.उ. से रात्रि 12:05 तक	07 ता. सू.उ. से रात्रि 04:15 तक
21 ता. रात्रि 08:59 से रात्रि अंत 06:19 तक	
23 ता. सू.उ. से रात्रि 08:38 तक	

मासिक राशिफल

16 नबम्बर - 15 दिसम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–अपमान होने का भय रहेगा। इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। नई योजनायें बनायेंगे। अपमान होने का भय रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– नेत्र रोग का भय रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। कारोबार में रुकावटें आयेंगी। शत्रु कमजोर रहेंगे। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा। अपमान होने का भय रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। व्यवसाय मधयम रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख मिलेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– नेत्र रोग का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। ससुराल से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। खर्चे अधिक होंगे। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। अपमान होने का भय रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। खर्चे अधिक होंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा नई योजनायें बनायेंगे। पत्नि को भी शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। ससुराल से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। खर्चे अधिक होंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। अपमान होने का भय रहेगा। नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कारोबार ठीक हो जायेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नबम्बर	दिसम्बर
17.श्री गणेश चतुर्थी व्रत, **19**.इंदिरागांधी जं. **21**.काल भैरवाष्टमी, **23**.श्री सांई बाबा जं. **24**.उत्पत्ति एकादशी व्रत **26**.प्रदोष व्रत, **29**.अमावस्या व्रत,	**1**. विश्व एड्स डे **3**. श्री विनायक चतुर्थी व्रत, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दि., विकलांग दि. **4**. भारतीय नौ सेना दि. **5**.चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी **6**. भानु सप्तमी **7**. दुर्गाष्टमी, भारतीय झण्डा दि. **8**. हरि नवमी, **10**. मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जं., मानवाधिकार दि. **13** पूर्णिमा व्रत **14**. पूर्णिमा व्रत, श्री दत्तात्रोय जं. **15**. सरदार पटेल पु. दि.

ग्रहारम्भ मुहूर्त

नबम्बर – नहीं है।

दिसम्बर – 10, 14,

गृह प्रवेश मुहूर्त

नबम्बर– नहीं है।

दिसम्बर – 9, 10, 14

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

नबम्बर– नहीं है।

दिसम्बर – 1, 4, 9, 10, 11, 14,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

नबम्बर– 16, 17, 24, 25

दिसम्बर – 9, 14

सर्वार्थ सिद्ध योग

नबम्बर	दिसम्बर
13 ता. सू.उ से रात्रि 07:32तक	04 ता. सू.उ. से प्रातः 09:07 तक
15 ता. सू.उ से दोप 01:15 तक	05 ता. सू.उ. से प्रातः 10:32 तक
16 ता. सू.उ से रा.अं. 06:37 तक	09 ता. प्रातः 10:10 से रात्रि अंत 06:55 तक
18 ता. सू.उ से रा.अं. 06:39 तक	14 ता. सू.उ. से सांय 06:50 तक
26 ता. दोपहर 03:04 से रात्रि अंत 06:45 तक	15 ता. सांय 04:21 से 16 ता. दोपहर 02:23 तक
28 ता. रात्रि 09:04 से रात्रि अंत 06:46 तक	

दीपावली पर किये जाने वाले टोटके

यदि आप वर्ष भर माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद चाहते है तो दीपावली की रात्रि में ठीक 12 बजे 11 घी के दीपक जलाकर अपने निवास के मध्य भाग में आकर एक चक्र बनाकर उसके मध्य रोली से श्री लिखें। वह 108 बार ही उच्चारणकरके माँ लक्ष्मी से अपने घर में वास करने का निवेदन करें।

दीपावली के पूजन के समय लाल कपडे में काली हल्दी के सिन्दूर वह कुछ सिक्के अथवा रूपयों का भी पूजन करें। अगले दिन उनको उसी लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रखें फिर इस प्रयोग का चमत्कार देंखे।

दीपावली के पूजन के समय आप 501 ग्राम सूखे छुआरे का भी पूजन करें। अगले दिन उन छुआरों को लाल कपड़े में बांध कर अपने धन रखने के स्थान पर रखें। 51 दिन तक लगातार एक रूपया किसी भी मंदिर में माँ लक्ष्मी के नाम से अर्पित करें और मां लक्ष्मी से अपनी सम्पन्नता का निवेदन करें।

दीपावली के पूजन से पहले आप किसी भी सुहागिन स्त्री को अपनी पत्नी के द्वारा सुहाग सामग्री अवश्य दिलवाएं। इससें मां लक्ष्मी प्रसन्न होती है। सामग्री में कोई भी इत्र अवश्य होना चाहिए।

आप दीपावली का पूजन करने से पहले एक नारियल व खीर अपने पूरे घर में ले के घूमे। इसमें यह ध्यान रखें कि जिस स्थान से एक बार निकल चुके हो तो दुबारा वहाँ न जायें अर्थात् ऊपर से चलने का आरम्भ कर नीचे होते हुए मुख्य द्वार पर आकर नारियल को फोड़ दे। व खीर वहीं छोड़ दें।

यदि आपके घर में कोई बार बार बीमार होता है अथवा नजर लगती है तो आप दीपावली पूजन से पहले एक आटे काचार मुख का दीपक बना कर उसमें कपूर भर दें। 125 ग्राम फिटकरी के साथ पीड़ित व्यक्ति के पूरे शरीर से 21 बार उल्टा उसार कर और किसी चौराहे पर आकर उस दीपक के कपूर को जला दें तथा फिटकरी दक्षिण दिशा की और फैंकदें और वापिस आ जायें। इसमें यह ध्यान रखें की आप मुडकर वापिस न देंखें। घर में प्रवेश से पहले हाथ पैर अवश्य धों लें। अगले दिन किसी मेहतर को 11 रूपये अवश्य दान करें। यदि संभव हो तो पादित का कोई पुराना वस्त्र भी दानकर दे। यदि आप इस दीपावली पर यह चाहते है। की मां लक्ष्मी का आपके घर में स्थाई वास हो तो शहद तथा कचनार के पत्तों को भी पूजन करें। अगले दिन दोनों को चांदी की डिब्बी में रख कर लाल वस्त्र में बांध कर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें।

आप धन तेरस पर श्री कुबेर यंत्र का विधि विधान से पूजन करें आप दीपावली के पूजन के समय मां लक्ष्मी की पुरानी तस्वीर पर अपनी पत्नी के हाथ से पूर्ण सुहाग सामग्री अर्पित करें। अगले दिन आपकी पत्नी स्नान कर पूजा करके उस सामग्री को मां लक्ष्मी का परसाद मान कर उठाकर स्वयं प्रयोग कर मां लक्ष्मी से निवेदन करें तो बर्ष भरमाँ लक्ष्मी की कृपा से आर्थिक सम्पन्नता रहती है।

किसी मंदिर में झाडू का दान करें। यदि आपके घर के आसपास कहीं महालक्ष्मी का मंदिर हो तो वहां गुलाब की सुंगंध वाली अगरबत्ती का दान करें।

घर के मुख्य द्वार पर कुमकुम से स्वास्तिक का चिन्ह बनांए। द्वार के दोनों और कुमकुम से ही शुभ लाभ लिखें।

दीपावली के दिन श्वेतार्क गणेश की प्रतिमा घर में लाएगें तो हमेशा बरकत बनी रहेगी। परिवार के सदस्यों को पैसों की कमी नहीं आएगी।

पूजा में लक्ष्मी यंत्र, कुबेर यंत्र और श्री यंत्र रखना चाहिए। यदि स्फटिक का श्री यंत्र हो तो सर्वश्रेष्ठ रहता है। एकांक्षी नारियल, दक्षिणावर्त शंख, हत्थाजोड़ी की भी पूजा करनी चाहिए।

घर में स्थित तुलसी के पौधे के पास दीपावली की रात में दीपक जलाएं। तुलसी को वस्त्र अर्पित करें।

स्फटिक से बना श्री यंत्र दीपावली के दिन बाजार से खरीदकर लांए। श्री यंत्र को लाल वस्त्र में लपेटकर तिजोरी में रखें। कभी भी पैसों की कमी नहीं होगी।

उपाय के अनुसार दीपावली के दिन 3 अभिमंत्रित गोमती चक्र, 3 पीली कौडियां और 3 हल्दी गांठो को एक पीले कपड़े में बाधें। इसके बाद इस पोटली को तिजोरी में रखें। धन लाभ के योग बनने लगेंगें।

यदि कोई व्यक्ति दीपावली के दिन किसी पीपल के वृक्ष के नीचे छोटा सा शिवलिंग स्थापित करता है तो उसकी जीवन में कभी भी कोई परेशानियां नहीं आएंगी। यदि कोई भयंकर परेशानियां चल रही होंगी वे भी दूर हो जाएंगी। पीपल के नीचे शिवलिंग स्थापित करके उसकी नियमित पूजा भी करनी चाहिए। इस उपाय से गरीब व्यक्ति भी धीरे धीरे मालामाल हो जाता है।

शनि दोषों से मुक्ति के लिए तो पीपल के वृक्ष के उपाय रामबाण है। शनि की साढेसाती और ढयया के बुरे प्रभावों को नष्ट करने के लिए पीपल के वृक्ष पर जल चढाकर सात परिक्रमा करनी चाहिए। इसके साथ ही शाम के समय पीपल के वृक्ष के नीचे दीपक भी लगाना चाहिए।

दीपावली से एक नियम हर रोज के लिए बना लें। आपके घर में जब भी खाना बने तो उसमें से सबसे पहली रोटी गाय को खिलांए।

शास्त्रों के अनुसार एक पीपल का पौधा लगाने वाले व्यक्ति को जीवन में किसी भी प्रकार को कोई दुख नहीं सताता है। उस इंसान को कभी भी पैसों की कमी नहीं रहती है। पीपल का पौधा लगाने के बाद उसे नियमित रूप से जल अर्पित करना चाहिए। जैसे जैसे यह वृक्ष बड़ा होगा आपके घर परिवार में सुख समृद्धि बढ़ती जाएगी, धन बढ़ता जाएगा। पीपल के बडे होने तक इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए तभी आश्चर्य जनक लाभ प्रात होगें।

दीपावली पर लक्ष्मी का पूजन करने के लिए स्थिर लग्न श्रेष्ठ माना जाता है। इस लग्न में पूजा करने पर महालक्ष्मी स्थाई रूप से घर में निवास करती है।

❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे .... समर्पयामि ''प्रणाम करके मन से परिक्रमा करें। पुष्प हाथ में लेकर प्रार्थना करें।

श्री गणेशाम्बिका प्रसन्न होकर मेरी तथा मेरे परिवार, इष्ट मित्र एवं सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की रक्षा करें तथा भगवती लक्ष्मी माँ स्थिर रूपेण इस भवन में एवं व्यापारादि के स्थान में निवास कर सर्वत्र हर्ष विजय प्रदान करें।

कुछ व्यक्तियों के यहाँ हठरी का पूजन होता है ''हठरी पर दीपक जलावें चावल हाथ में ले लें और कहें '' हठरी दैव्यै आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ''चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। रूपया, लड्डू, मिठाई, खील-बतासे, हठरी में रख दें। दुकान, कारखाना, मिल, दफ्तर गद्दी आदि स्थानों पर बही खाता, कलम, दवात, तिजोरी (कैश बाक्स, गल्ला), मशीन, तराजू, बाँट आदि का पूजन होता है उसे ऊपर लिखे क्रमानुसार अथवा केवल चावल या खील चढ़ाकर सम्पन्न करें। इसके बाद कमल गट्टे की माला से कुवेर मंत्र का 108 बार जाप करें।

ॐ यक्षाय कुबेराय धन धान्य समृद्धि करो पुण्य पुण्य स्वाहा

तिजोरी, कैश बॉक्स या गल्ले में बसने की पुड़िया (पंसारी के यहाँ मिलेगी) लाल कपड़े में बाँध कर रख दें। अब एक थाली में ग्यारह दीपक तेल के जलावें और खीलें हाथ में लेकर कहें'' ॐ दीपेभ्यो नमः ''खीलें दीपकों पर चढ़ा दें। घर में, भगवान के मन्दिर में , रसोई में, सब कमरों में, आँगन, छत, द्वार, नाली के पास, चौराहा, कुँआ, हैण्डपम्प, मन्दिर, पीपल के पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर रखें। थाली में सतिया लगाकर तथा फूल डालकर आरती करें।

शेष पेज 7 से आगे .... आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

शनि की साढ़ेसाती निवारण के लिये- यदि आप शनि की साढेसाती अथवा ढैया से परेशान है तो किसी भी शनिवार को एक कटोरी तेल भरकर उसमें यह तांत्रोक्त नारियल डाल दें। उस तेल में अपना मुँह देखकर शनिश्चर का दान लेने वाले को दान कर दें। ऐसा 11 शनिवार करें तो शनि का प्रभाव बहुत कम होगा।

गृह कलह से शांति के लिये- यदि आप घर में रोज रोज के लडाई झगड़े से परेशान रहते है, घर का वातावरण प्रायः क्लेशपूर्ण रहता हो तो यह उपाय करके देखे । 9 तांत्रोक्त नारियल लें। उस पर काला धागा लपेट लें। सारा दिन उसे पूजा स्थान पर रहने दें। सांयकाल आप उसे धागे सहित जला दें। दीपावली के पांच दिन धनतेरस से भाई दूज निरन्तर यह प्रयोग करें। विश्वास माने आपके घर में अमन चैन का वातावरण दिखाई देंगा।

शेष पेज 12 से आगे .... के पानी में कच्चा दूध और गंगाजल मिलाएं। स्नान के बाद अच्छे वस्त्र धारण करें और सूर्य को जल अर्पित करें। जल अर्पित करने के साथ ही लाल पुष्प भी सूर्य को चढाएं। किसी ब्राह्मण या जरूरतमंद व्यक्ति को अनाज का दान करें। अनाज के साथ ही वस्त्र का दान करना भी श्रेष्ठ रहता है।

दीपावली पर श्री सूक्त एंव कनकधारा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। रामरक्षा स्तोत्र या हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ भी किया जाता सकता है।

महालक्ष्मी को तुलसी के पत्ते भी चढाने चाहिए। लक्ष्मी पूजा में दीपक दांए, अगरबत्ती बाएं पुष्प सामने व नैवेद्य थाली में दक्षिण में रखना श्रेष्ठ रहता है। महालक्ष्मी के मंत्र ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलाये प्रसीद प्रसीद् श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मयै नमः इस मंत्र का जप करें मंत्र जप के लिए कमल के गटे की माला का उपयोग करें। दीपावली पर कम से कम 108 बार इस मंत्र का जप करें।

दीपावली से यह एक नियम रोज के लिए बना लें कि सुबह जब भी उठे तो उठते ही सबसे पहले अपनी दोनों हथेलियों का दर्शन करना चाहिए। दीपावली पर श्री यंत्र के सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके कुश के आसन पर बैंठे। फिर श्री यंत्र का पूजन करें और कमलगट्टे की माला से महालक्ष्मी के मंत्र ऊँ श्री ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मयै नमः का जप करें।

शेष पेज 8 से आगे .... की स्थापना अवश्य करें तथा मां लक्ष्मी से स्थिर रूप से घर में पधारने की प्रार्थना करे। इनकी पूजा से आर्थिक असुरक्षा का भय दूर होता है व जीवन में आर्थिक सुरक्षा बनी रहती है। इन पादुकाओं में अंकित समस्त चिंह जैसे कमल कलश, चक्र, मत्सय, त्रिकोण, त्रिशुल, शंख, सूर्य, ध्वजा आदि शुभ लाभ के प्रतीक है।

8. दीपावली की रात्रि श्री यंत्र की स्थापना अपने घर एंव प्रतिष्ठानों में कर लाभ अवश्य कमायें। यंत्र राज श्री यंत्र की जितनी प्रंशसा की जाए उतनी ही कम है और यदि यह स्फटिक पर बना हो तो इसकी महिमा में और वृद्धि हो जाती है। श्री यंत्र के दर्शन मात्र से ही मनुष्य धन्य हो जाता है। इस यंत्र की पूजा साधना करने से साधक की सभी मनोकामनायें इसी जन्म में पूर्ण हो जाती है। धन के साथ ही यश भी बढता है।

9. गणेश यन्त्र की स्थापना दीपावली के मुर्हूत पर करें। पीले वस्त्र पर हल्दी के मिले चावल से स्वास्तिक बनाकर गणेश यंत्र की स्थापना विधिवत ढंग से करें। ऊं बक्रतुण्डाय ऊं मंत्र का जाप करें। इससे भगवान गणेशजी की कृपा सदैव आपके ऊपर व आपके परिवार पर बनी रहेगी। पढने वाले बच्चों की बुद्धि ठीक ढंग से चलेगी तथा व्यक्ति का मन अपने व्यवसाय में लगेगा। सदैव उन्नति होती रहेगी।

10. दीपावली के शुभ मुहूर्त में सिद्ध श्री माँ लक्ष्मी (श्री यंत्र रक्षा) का लाकेट विधिवत ढंग से शुभ समय पर धारण करें। इससे नौकरी व व्यवसाय में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

पूजा के यंत्र-तंत्र-रूद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)
रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री
स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री
नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृह्मजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख
दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)
सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष
सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री
पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड
पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें
तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई
मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262